सेव्ड

शरोवन

***

‘यह दुनियां बनाने वाले का चलन है कि वह कोई भी आपकी प्यारी चीज़ आपके साथ सदा नहीं रहने देगा। किसी का प्यार वह छीन लेता है तो किसी के सारे अरमानों पर आग बरसा देता है। जमाना सा गुज़र गया था जब कि आप ऐसे इंसान मिले थे, जिससे अपनी मन पसंद बातें करके जी हल्का कर लेता था, सो वह भी कूच करने लगे। चलो, फिर एक बार चोर-बदमाशों के साथ दिन गुज़ारने की कोशिश करूंगा।’

***

अमरीका की मशीनी, बेहद व्यस्त भरी ज़िन्दगी के लिये इतना ही कहना काफी होगा कि यदि चैन से दो घंटे की नींद भर आ जाये तो वही सकून के लिये काफी होगा। रात भर लैब में बीमारों के रक्त की जांच करने के पश्चात् जैसे ही घर आया रोज़ के समान स्नानादि से निबटने के बाद अपना लैबटाॅप खोलकर बैठा ही था कि पत्नि ने भाप उड़ाते हुये चाय के प्याले को मेरी मेज पर लाकर रख दिया । आदत थी कि, मैं काम से आकर पहले चाय पीता था, उसके बाद ही मेज पर रखी हुई पिछले दिन की डाक देखता था। अपने ईमेल चैक करता था। इतना सब कुछ करने के पश्चात ही बाद में स्नान, खाना आदि खाकर फिर सोने जाता था। बिल्ली- मैं भी किसकदर अजीब

और अनहोना हो सकता हूं? पत्नि की बिल्ली जैसी भूरी आंखों के कारण मैं उसे बिल्ली कह कर ही बुलाता हूं। जब चाय का प्याला रख कर अपनी आदत के समान वह नहीं गई तो मैं चौंक गया । एक संशय से उसकी ओर देखा तो वह बोली, 'आपके आने से पूर्व ही भारत से सनी का फोन आया था।' 'कोई विशेष खबर है क्या? सब ठीक तो है?' मेरे मुख से अनायास ही निकल गया। सनी मेरा छोटा भाई है। मेरा चौंकना बहुत स्वभाविक ही था। 'आप घबराइये मत। डाॅयोसीज़ के बिशप जोनाथन धर्मी के लड़के मार्क को वहीं कम्पाऊंड के एक युवक धनीदास ने गोली मार दी है। यही बताने के लिये उसका फोन आया था।' अपनी बात बताकर पत्नि चली गई तो मैं विचारों में डूब गया। अब से बीस साल पहले का धनीदास, जिसे धनिया कह कर ही हम सब बुलाते थे, मेरे सामने तब वह बालक ही था; को मैं खूब अच्छी तरह से जानता था। और बिशप के लड़के मार्क की बदनामी और बिगड़ैल आदतों से संबधित खबरें मैं यदाकदा सुनता ही रहता था। तीन सप्ताह पहले ही तो एक मसीही मासिक पेपर में उसके बारे में छपा था कि उसने अपने पापों से तौबा कर ली है, और बाकायदा पानी में डूब का बपतिस्मा भी लिया है और वह अब 'सेव्ड' है (सेव्ड का अर्थ है कि जब कोई मनुष्य अपने पापों से अंगीकार करता है और जीसस को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार कर लेता है तो वह उस पाप की सज़ा जो आत्मिक मृत्यु है, से बच जाता है, लेकिन इसके बाद वह जो कर्म करेगा उनका निर्णय बाद में होगा. ये मसीहियों का विश्वास है).

यह सेव्ड क्या होता है? अमरीका आने से पहले ना तो मैंने यह नाम कभी सुना था और ना ही इसके वास्तविक अर्थ से वाकिफ था। एक मसीही होने के नाते और ईसाई परिवार में जन्म लेने के बाबजूद भी मैं इस षब्द का अर्थ कतई नहीं जानता था। पहली बार जब इससे मेरा वास्ता पड़ा तो वह भी यहां विदेश में आकर ही। अमरीका के एक चर्च में इबादत समाप्त होने के पश्चात जब सब के साथ मैं भी चर्च से बाहर निकला था, तो सब ही अन्य अमरीकियों से 'हाय, 'हाऊ इज़ गोईग' आदि बोल रहे थे और हाथ मिलाते जा रहे थे। तब ही एक महिला ने मुझसे बड़े ही प्रसन्नता से हाथ मिलाया और पूछा था कि, 'आर य् सेव्ड?' मेरी समझ में कुछ भी न आने के बाद भी तब मैंने हां में अपना सिर हिला दिया था। इसके साथ ही उसने एक प्रश्न और भी किया था, 'आर यू बैपटिस्ट?' (क्या आप बेप्टिस्ट समुदाय से हैं?) ब्रिटेन के गोरों ने जब भारत के साथ-साथ अन्य देशों में भी राज्य किया और अपने चर्च बनाये थे, तब उनको ही बैप्टिस्ट कहा गया है। तब भी न जानते हुये मैंने हां कह दिया था। बाद में पता चला था कि मैं जिस चर्च में इबादत करने गया था, वह बैपटिस्ट डिनोमिनेशन्स का था। अपने भारत में तो जब भी कोई पूछता था तो केवल एक शब्द 'क्रिष्चियन' या मसीही या फिर ईसाई कह कर बात खत्म हो जाती थी, पर यहां विदेशी भूमि पर आने के बाद ही पता चला कि, ईसाइयों में भी एकता न होकर

अनेकतायें हैंे और बात होती है विभिन्नता में एकता की? आप किसी से भी पूछ लीजिये , वह आपको क्रिष्चियन न बताकर, बैपटिस्ट, मेथोडिस्ट, प्रोटोस्टेंट, लूथरन, चर्च आॅफ गाॅड आदि बतायेगा। बाइबल एक, जीज़स एक, खाना-पीना, मछली, शराब, गोश्त , दारू सब एक, इबादत एक; लेकिन फिर भी हम अनेक? ऐसा क्यों? तब से क्या , कितने ही दशक बीत गये, आज तक यह बात मेरी समझ में नहीं आ सकी है। और अपने भारत में जो बात कभी-कभार मुझको अख़रती थी, वह थी साहबी तौर पर रहने के बाद भी मुझे अछूते ढंग से ट्रीट किया जाता था। एक हरिजन समान सम्मान दिया जाता था। लेकिन यहां विदश में ऐसा कुछ भी नहीं। हमाम में सब नंगे। यहां जाति आदि से किसी को मतलब नहीं। जिस बात से मतलब रखा जाता है, वह है हैमबर्गर, सैक्स और फन। वह आदमी जो धार्मिक संकीणताओं में उलझ कर मुझे भारत में एक अछूत की दृष्टि से देख कर मुझ से दूर रहने की कोशिश करता था, वही यहाँ अमरीका में पास बैठना तो दूर की बात, बड़े ही मज़े के साथ, एक ही मेज़ पर एक साथ बैठ कर गाय का मांस खाता है, शराब पीता है, ईसाईयों की पार्टियों में जाता है और काम के नाम पर बाथरूम भी साफ़ करता है. कहने का मतलब है कि मतलब और काम बनना चाहिए. किसी भी तरह से डॉलर जेब में आना चाहिए, चाहे इसके लिये राम, रहीम, जीसस, अल्लाह आदि को अपनी जेब में ही क्यों न रखना पड़े. यहां का आम आदमी कभी राजनीति की बात नहीं करता। सड़क पर यदि कोई दुर्घटना हो गई है, कोई मर गया है, तड़प रहा है, उसे मतलब नहीं, कोई चिन्ता हीं। वह तो बस नित्य की होने वाली घटना के समान, बड़ी लापरवाही से, एक सामान्य ढंग से देखता हुआ निकल ही जायेगा। नेक सामरी कौन इंसान था?

भारत में रहते हुए जब स्नातक की परीक्षा पास कर ली और आगे की पढ़ाई के लिए मुझे मिशन की तरफ से कर्ज़ का बज़ीफा मिलने से इनकार कर दिया गया तो नौकरी ढूंढने के अलावा कोई चारा नहीं बचा था। हांलाकि, मिशन की तरफ से आगे की पढ़ाई के लिये कर्ज़ के बज़ीफे की मनाही का कारण तो मैंने नहीं जानना चाहा था पर यह बात मेरी समझ में नहीं आ सकी थी कि जब मेरे साथ के अन्य साथियों, जैसे प्रकाश, प्रेममसीह और निर्मला आदि को मिशन ने बज़ीफा देना स्वीकार किया है तो मुझे क्यों मना कर दिया ? और तब से मुझे न जाने क्यों मिशन और डाॅयोसीज़ की कार्य प्रणाली पर भ्रष्टाचार के दाग़ नज़र आने लगे थे। उसके पश्चात फिर मैंने ना तो किसी से कोई शिकायत ही की और ना ही किसी के सामने हाथ फैलाये। पर अपने आप से एक दृढ़ संकल्प अवशय ही कर लिय था कि कभी भी मिशन की सेवा नहीं करूंगा और ना ही उसमें नौकरी के लिये कोई आवेदन दूंगा। फिर जब लाख कोशिशें करने के बाद भी ढंग की नौकरी भी नहीं मिली तो इसी सिलसिले में मुझे दूसरे शहर जाना पड़ा। एक काॅलेज के समय का मित्र था। वह विद्युत विभाग में क्लर्क था। उसने कहा था कि यहां आ जाओ तो 'मस्टर राॅल' अर्थात् दैनिक वेतन पर अपने ही कार्यालय में लगवा दूंगा। न होने से कुछ बेहतर होगा,

यही सोच कर मैं चला आया था। नया शहर था, नई जगह और नये अपरिचित से लोग भी। जहां पर मैं अस्थाई रूप से रहता था, वहीं पर पास ही में बस स्टैंड भी था। सुबह का नाश्ता करने बस स्टैंड की कैंटीन पर चला जाता था। कैंटीन का नाम था रामदास कैंटीन। जैसा नाम था, ज़ाहिर था कि मालिक का नाम भी रामदास ही होगा। वहां पर जाकर रोज़ सुबह का नाशता करने का जो आकर्षण बना था वह थीं रामदास की सटीक बातें। जब मैं पहली बार गया था तो उसकी अपने एक साथी से बहस हो रही थी। बहस का कारण भी एक बहुत ही मामूली सी बात थी। उसके साथी ने नमक मांगा तो नमक न कहकर वह बोला था कि, 'सोडियम दे दे।' रामदास ने नमक उठाकर दिया और बोला कि, 'अंग्रेजी बोलता है तो सही बोला कर। सोडियम नहीं सोडियम क्लोराइड कहते हैं। खाली सोडियम अकेला रहेगा तो पानी पड़ते ही आग लगा देगा।' बस यहीं से उन दोनों की जो बहस छिड़ी तो फिर आसानी से बंद न हो सकी। अंत में रामदास का साथी जैसे झुंझलाते हुये उससे बोला कि,
'तूने कितनी किताबें फाड़ डाली हैं?' कहने का आशय था कि शिक्षा कितनी है?
'किताबों की बात मत कर। यह पूछ कि मैंने कितने मास्टर मार डाले हैं?' रामदास का उत्तर था। तब मेरे साथ अन्य देखने वाले भी हंस पड़े थे। थोड़े से दरज़े तक पढ़े हुये , दैनिक मजदूरी पर अपना जीवन व्यतीत करने वाले लोगों की बातें, उनके संवाद और कहने का ढंग का अंदाज ही निराला होता है।
बहस समाप्त हुई। गद्दी पर बैठा हुआ रामदास अपने ग्राहकों को जल्दी से निबटा देने में व्यस्त हो गया। फिर जब वह सामान्य हुआ और मेरा नंबर आया तो मैंने उससे पूछा कि,
'आपकी चाय की बड़ी तारीफ सुनी है। एक प्याला चाय बनाकर गिलास में दे देंगें?'
'हम चाय नहीं बनाते बाबू जी। दूध में पत्ती डालते हैं।' कहते हुये उसने एक बड़े से पतीले पर से ढक्कन हटाया और उसमें से मेरे लिये चाय बनाने के लिये दूध निकालकर सॉसपेन में डाल कर लाल अंगारों से दहकती हुई अंगीठी पर रख दिया। लेकिन जब मैंने दूध का पतलापन देखा तब उसकी बात और अक्ल समझ में आई। वह दूध में पहले ही से आवश्यकतानुसार पानी मिलाकर रख लेता था और उसी में से चाय बनाकर सब को दिया करता था। ग्राहक यही समझते थे कि वह ख़ालिस दूध की चाय बनाता है। इसीलिये बस स्टेंड के बाहर यदि चाय के एक प्याले का मूल्य पचास पैसे होता था तो उसकी चाय का दाम एक रूपया । चाय के दाम में इतने बड़े अंतर का कारण दूध की चाय बनाकर बेचना था। यह सोचकर मैं अनायास ही मुस्करा पड़ा तो रामदास मुझे एक सशय से देखता हुआ बोला,
'बाबू जी, आप मुस्करा रहे हैं?'
'हां।'
'मेरी बात पर या मेरे काम पर?' वह मुस्कराया तो मैंने भी कह दिया कि,
'दोनों ही।'

‘मतलब?’
‘लोग पानी में चाय की पत्ती डालकर चाय बनाया करते हैं, पर पहली बार मैंने सुना और देखा कि दूध में भी चाय की पत्ती डाली जाती है। सचमुच आप दूध में पत्ती डाला करते हैं?’ मैंने कहा तो रामदास ने मुझको नोकीली दृष्टि से देखा और फिर कहा कि,
‘लगता है कि आप इस शहर में नये आये हैं। पहले कभी देखा नहीं। कहां के हैं?’
‘बहुत से लोग कहीं के भी तो नहीं हुआ करते हैं।’
‘काम क्या करते हैं आप?’
‘काम ढूंढना भी तो एक काम ही है।’
‘अमिताभ बच्चन के साथ कितने दिनों तक रहे थे आप?’ रामदास ने कहा तो अनायास ही मैं हंस पड़ा। साथ में रामदास भी हंस पड़ा। मेरी चोरी पकड़ी गई थी। मैं अमिताभ बच्चन की फिल्म शक्ति के डाॅयलाग जैसी बातें करने लगा था। बाद में जब दोनों सामान्य हुये तो रामदास ने मुझको चाय बना कर दी। फिर उसने बताया कि वह कायदे से उसे जैसा दूध मिलता है, उसी में एक-एक के अनुपात से आधा दूध और आधा पानी मिलाकर पहले ही से रख लेता है। ऐसा करने से उसे दो फायदे हो जाते हैं। पहला तो कोई भी ग्राहक यह नहीं कह पाता कि चाय में दूध ज़रा ज्यादा डाल देना। और दूसरा, ग्राहक यही समझता है कि उसे खालिस दूध की चाय बनाकर दी जा रही है।

यूं भी रामदास, मेरी दृष्टि में निहायत ही सदाचारी, मुंहफट और स्पष्ट बात करने वाला व्यक्ति था। वह कभी भी अपने ग्राहकों से न तो नाजायज़ पैसे लेता था और ना ही उन्हें कभी भी कोई गलत या खराब चीज़ बेचता था। जितना लाभ वह अपनी दुकानदारी में लेता था वह भी कायदे से और खुलेआम बता और समझाकर। अपनी कैंटीन में काम करने वाले अपने समस्त नौकरों का भी वह बहुत ख्याल रखता था। उसकी इस आदत पर जब मैंने एक दिन उसके यहां चाय पीते हुये उससे पूछा कि,
‘रामदास भाई, दुकानदारी हो या कोई भी व्यापार, जब तक इसको चलाने वाला चालाकी और चतुराई न करे तो वह कभी भी पैसा नहीं बना सकता है। लेकिन आपका स्वभाव और काम देखते हुये मुझे नहीं लगता है कि आप कोई ज्यादा पैसा बनाते होगे। आपका काम कैसे चल जाता है?’ तब रामदास ने मुझे उत्तर दिया। वह बोला कि,
‘देखो काका बाबू, आप ठीक कहते हो कि पैसा दो नंबर में ही है। लेकिन मुझे किसी की आहें छीनकर पैसा जमा नहीं करना है। फिर जमा करके करूंगा भी क्या? कोई अपने साथ बांधकर तो ले नहीं जा सकता। और ना ही कोई मुझको इतना अधिक प्यार करने वाला है जो मेरे साथ मर ही जायेगा। बस मेहनत से, परिश्रम से, ईमानदारी की दो रोटी मिल जायें, घर-परिवार का पालन

कर लूं और बच्चों को किसी लायक बना दूं, इतना ही भर चाहिये मुझे।'
राम दास की इस बात पर मैं आश्चर्य से उसका चेहरा ताकने लगा तो वह आगे बोला, 'बाबूजी, मैं सच्चाई के सहारे इस संसार में किसी से नहीं डरता हूं। बस अपने भगवान से थरथराता हूं। जानता हूं कि वह बुरे कामों का बदला जरूर देता है। और आपसे भी अर्ज ही कर सकता हूं कि आप भी ऐसे विद्युत विभाग में काम करते हैं, जहां के बारे में सुना है कि वहां की गुट्टी-गुट्टी बदमाश है। लेकिन आप तो ईसाई हैं, इसलिये ऐसा करने की गुंजायश कम ही है। फिर भी होशियार रहना। किसी का बेईमानी से खा तो लो, पर इसका बाद में अंजाम बहुत खराब होता है। सब निकल जाता है और आदमी सड़क पर आ जाता है।'

इस प्रकार से हर दिन रामदास की कैंटीन पर सुबह का नाश्ता करने और वहां पर जाने से वह एक प्रकार से मेरा मित्र सा बन गया । उसने मुझे इस नये शहर के बारे में बहुत सी आवश्यक जानकारियां भी दीं। हर ऊंच-नीच के बारे में बताया। गलत और संवेदशील स्थानों पर जाने से आगाह किया । फिर एक दिन विद्युत विभाग में अस्थायी नौकरी करते हुये मुझे स्थायी तौर पर रख लिया गया तो मुझे फिर से यह शहर छोड़ना पड़ा। मेरी नौकरी दूसरे शहर में लग चुकी थी। मेरे लिये फिर एक बार नया शहर और नई जगह इंतज़ार करने लगी थी। रामदास से बिछुड़ने का दुःख तो था पर करता भी क्या? नौकरी और पेट; इन दोनों सवालों ने मेरे सामने विवशता की दीवारें खड़ी कर दी थीं। तब मैंने एक दिन रामदास को अपने जाने और उसकाb शहर छोड़ने की सूचना दी तो वह क्षण भर के लिये उदास तो हुआ पर सन्तोष करते हुये बोला कि, 'यह दुनियां बनाने वाले का चलन है कि वह कोई भी आपकी प्यारी चीज़ आपके साथ सदा नहीं रहने देगा। किसी का प्यार वह छीन लेता है तो किसी के सारे अरमानों पर आग बरसा देता है। जमाना सा गुज़र गया था जब कि आप जैसे इंसान मिले थे, जिनसे अपनी मन पसंद बातें करके जी हल्का कर लेता था, सो वह भी कूच करने लगे। चलो, फिर एक बार चोर-बदमाशों के साथ दिन गुज़ारने की कोषिष करूंगा।'
रामदास की इस बात पर मुझे बहुत दुःख हुआ। मैं उससे कुछ भी नहीं बोला। बस चुप ही बैठा रहा तो वह आगे बोला कि,
'आप जा कौन से शहर रहे हैं?'
'भरतपुर। पता नहीं वहां के कैसे लोग हैं?' मेरे मुंह से अनायास ही निकल गया तो रामदास मुझे आश्चर्य से देखते हुये बोला,
'आपको नहीं मालुम है कि लोग कैसे हैं? मेरी एक बात याद रखना कि, हम जिनके भी बीच रहें, हमारे यहां का आदमी तो बहुत अच्छा है, अगर किसी कम्बख्त से काम भर न पड़े।'
रामदास की इस सटीक बात पर मैं फिर हंस पड़ा। कितनी सटीक बात उसने कही थी। सचमुच

उसको .जिन्दगी के हरेक उतार-चढ़ाव का ख़ासा अनुभव था। आपका अगर किसी आदमी से कोई काम भर पड़ गया तो फिर देखिये कि वह कैसा नाच नचाता है। रामदास की बात का शायद यही मतलब था।

इसी बीच रामदास ने अपने पीने के लिये चाय बनाई थी। सुबह के ग्राहक खा-पीकर जा चुके थे। सुबह की दुकानदारी अब कुछ मंदी पड़ चुकी थी। रामदास के एक अन्यम परिचित भी वहां पर बैठे हुये सुबह का अख़बार पढ़ रहे थे। लेकिन उनके हाव-भाव से लगता था कि उनका ध्यान अख़बार पर कम, हमारी बातों पर अधिक केन्द्रित था। रामदास ने अपने लिये चाय निकाली और फिर औपचारिकता से मुझसे भी पूछा कि,
'बाबूजी, आप चाय और पियेंगे?'
'नहीं। धन्यवाद।' मैं पहले ही चाय पी चुका था, इसलिये मैंने उसे धन्यवाद कहते हुये सहज ही मना कर दिया। तब रामदास ने उन अख़बार पढ़ने वाले परिचित से भी चाय के लिये पूछा। मैं जानता था कि वे साहब कभी भी चाय नहीं पीते थे, सो मना कर ही देंगे। पर मैं यह सुनकर आश्चर्य कर गया जब उन साहब ने अंगड़ाई लेते हुये कहा कि,
'चाय ! अच्छा लाओ पी लेते हैं, क्या बिगड़ता है।'
तब रामदास ने जैसे ना चाहते हुयेn भी एक प्या ले से भी कम बची हुई चाय निकाल कर उन साहब तक पहुंचा दी।
फिर काफी देर की ख़ामोशी के बाद, जब उन साहब ने चाय पी ली और अख़बार भी पढ़ लिया तो चुपचाप कुछ भी कहे बगैर चले गये तो मैंने रामदास ने पूछा,
'इन साहब ने कैसे चाय पी ली? यह तो कभी चाय पीते ही नहीं थे?' इस पर रामदास एक कड़वी मुस्कान के साथ मुझसे बोला कि,
'अरे बाबूजी! इनकी क्या है। मुफ्त का मिलेगा तो ज़हर भी खा जायेंगे। आज तक दस पैसे की कोई चीज़ नहीं खरीदी होगी मेरी कैंटीन से। ऊपर से एक ग्राहक का स्थान दो घंटे तक घेरे बैठे रहते हैं और अख़बार भी पढ़ते हैं तो फ्री का ही।'
मैं सुनकर मुस्कराता हुआ अपने स्थान से उठ कर खड़ा हुआ और रामदास से बोला कि,
'भाई रामदास आपकी बातें और स्नेह मुझे हमेशा याद रहेगा।'

उसके बाद मेरी पोस्टिंग भरतपुर में हो गई तो मैं वहां चला गया। जाने से एक दिन पहले रामदास ने मुझसे सुबह के चाय और नाश्ते के पैसे भी नहीं लिये। यह उसका मेरे प्रति पनपे हुये प्रेम और स्नेह का वह उपहार था जो उसने मुझको अपना शहर छोड़ने से पूर्व अर्पित किया था।

फिर दिन बदले। कई मौसम आये और चले भी गये । बारिशें भी आईं और बादल भी गड़गड़ाकर भाग गये । मैं अपनी नौकरी और काम में व्यस्त हो गया। लेकिन जब भी छुट्टी मिलती तो घर चला जाता था। घर पर आकर जाहिर था कि सबसे मिलता था। अब तक धनिया ने भी अपनी पढ़ाई पूरी कर ली थी और वह भी किसी नौकरी की तलाश में था। फिर एक दिन उसने अपनी नौकरी लगवाने के लिये मुझसे बात की तो मैंने उसे आश्वाशन तो नहीं दिया पर यह जरूर कहा कि कोशिश अवश्य ही करूंगा। तुम अपना प्रार्थना पत्र मुझे दे देना। उसने अपना आवेदन पत्र मुझको उसी दिन दे दिया था। मैं उसके सारे कागज़ात लेकर भरतपुर आ गया और अपने आॅफीसर से बात की तो मेरा आॅफीसर उसको अस्थायी तौर पर लगाने के लिये राज़ी भी हो गया । तब मैंने धनिया को सूचित किया तो वह आने के लिये तैयार भी था, परन्तु उसी बीच उसको एक मिशन स्कूल में नौकरी मिल गई तो वह फिर नहीं आया । उसके ना आने का कारण शायद उसका अपना शहर और उसके मां-बाप ही थे, जिन्हें शायद वह नहीं छोड़ना चाहता था।

बाद में समय बदला। हालात ने फिर एक बार पलटा खाया। मेरा विवाह भी हो गया और एक दिन मैं अपना देश, घर-बार और परिचितों को छोड़कर अमरीका आ गया। अपने देश और परिचितों की तमाम स्मृतियों को मन के एक कोने में छिपाकर मैं विदेशी भूमि पर फिर एक बार अपना घर, अपनी जगह और अस्तित्व कायम करने का प्रयत्न करने लगा। समय-असमय धनिया से भी बातचीत हो जाती थी। जब भी बात होती थी तो वह मुझसे सदैव अमरीका बुला लेने की ही बात करता था। साथ ही वह अपने स्कूल के काम के बारे में भी बताता था। वहां पर फैले मिश्नरी भ्रष्टाचार के बारे में बताता रहता था। बिशप जोनाथन धर्मी का हाई स्कूल पास लड़का उस स्कूल का प्रबंधक था। अक्सर उसकी बुराइंयों और दुष्कर्मो के बारे में धनिया बात करता रहता था। सारे मसीही समाज में उसकी करतूतों का चर्चा था।

तब एक दिन, बहुत दिनों के पश्चात धनिया का अचानक से फोन आया और उसने बहुत उदास स्वरों में मुझे बताया कि उसको नौकरी से निकाल दिया गया है। कारण था कि वह पहले ही से एम. ए. एल. टी. था। एक सी. टी. ग्रेड की एक जगह रिक्त हुई तो वह स्थान धनिया को न देकर उससे जूनियर अध्यापक जो एम. ए. नहीं था, पर उसको पहले एम. ए. कराया गया और बाद में वह जगह उसे दे दी गई है। धनिया ने इसकी शिकायत की तो प्रबंधक ने उससे कहा कि यहां ऐसा ही चलता है। तुम्हें काम करना है तो करो, नहीं तो घर बैठो। तब धनिया ने इसकी शिकायत स्कूल बोर्ड में कर दी और जब वहां से इसकी जांच के लिये पत्र आया तो बिशप के लड़के ने उसे नौकरी से ही निकाल दिया। मैं यह सब सुनकर दंग रह गया । मैंने तब उसे

तसल्ली दी। सब्र से काम लेने की सलाह दी और थोड़े से पैसे भी यही सोचकर भेज दिये कि जब तक उसका कोई दूसरा ज़रिया नहीं बनता है वह अपना काम चला लेगा। लेकिन, इतना सब कुछ होने के बाद कुछ ही दिन व्यतीत हुये होंगे कि आज बिशप के लड़के को उसी धनिया के द्वारा गोली मारने की खबर सुनकर मेरा चौंकना तो बहुत स्वभाविक ही था पर आश्चर्य इसलियइ नहीं कर सका क्योंकि जो हालात वहां तैयार हुये थे, उन सबका अंजाम कुछ ऐसा ही होना था।

पत्नी के द्वारा गर्म चाय का प्याला अपनी सारी भाप उड़ाकर अब तक ठंडा पड़ चुका था, और मेरे ज़हन में यही सवाल बार-बार कोंध रहा था कि, ईश्वर के धार्मिक चलन में कौन 'सेव्ड' है? बिशप जोनाथन धर्मी का बिगड़ैल लड़का जो ईसाई स्कूल का प्रबंधक था और जिसने बाकायदा अपने पापों से प्रायश्चित करके डूब का बपतिस्मा भी लिया मगर एक सीधे-साधे मसीही लड़के की दो जून की रोटी को छीनने से भी नहीं हिचका, या वह धनिया जिसने न्याय न मिलने के कारण एक जुल्मी को कब्रिस्तान पहुंचा दिया या फिर अपनी कैंटीन में दिन-रात परिश्रम करने वाला वह रामदास जो झूठ और चालाकी की एक पाई तक लेने से अपने भगवान के भय से थर-थराता है?

समाप्त.